Name - Suraj Kumar

College name - Shakuntalam Institute of teacher Education
Sasaram Rohtas (Bihar)

Paper - C4 (B.Ed 1st year)

Date - 12/06/2020

हिन्दी पद्य/ पद्यांश / कविता शिक्षण
Hindi poetry Teaching

- साहित्य का प्रमुख अंग गद्यांश एवं पद्यांश दोनों को माना जाता है।
- कवि अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति पद्य के माध्यम से सहज रूप से करता है।
- भावना, कल्पना तथा बुद्धि तीनों पक्षों का समावेश पद्य के अन्तर्गत होता है।
- पद्य में भाव-तत्व प्रधान होता है, एवं मनुष्य की वाणी जो शब्द-विधान करती है, वही कविता है।
- रस, अलंकार, रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि, गुण कविता के विधान एवं आत्मा के विविध परिचायक तत्व है।
- कविता जीवन की समालोचना भी है और संगीतमय विचार भी है।
- कविता जीवन का प्रतिबिम्ब भी है और सर्वोत्तम शब्द-योजना भी है।

- आचार्य ~~मम्मट~~ शुक्ल — "कविता वह साधन है जिसके द्वारा शेष सृष्टि के साथ हमारे रागात्मक सम्बन्ध की रक्षा और निर्वाह होता है।"
- जॉन्सन - कविता सत्य और आनन्द के एकीकरण की कला है, जिसमें विवेक के साथ कल्पना का प्रयोग होता है।

= "वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान।
उमड़ कर आँखों से चुपचाप, बहीं होगा कविता अनजान।।

विशेषताएँ :-

1. कविता में रस, अलंकार, लय, ध्वनि, सौन्दर्य, शक्ति का समावेश होता है।
2. कविता की धारा आरम्भ में दुखी हृदय से निकलती है। कविता उसे भावना से ऊँचा उठाकर वहाँ ले जाती है, जहाँ सही आनन्द है।
3. रसात्मक वाक्य की काव्य होता है, जिसमें सौन्दर्य का संकेत होता है।
4. संगीतमय विचार ही कविता है।
5. कविता वह साधन है जिसकी सहायता से शेष सृष्टि के साथ रागात्मक सम्बन्ध की रक्षा तथा निर्वाह होता है।
6. कविता जीवन, समाज तथा राष्ट्र का प्रतिबिम्ब होती है। कविता आनन्द की अनुभूति का सशक्त साधन है।
7. कविता के शिक्षण का विशिष्ट रूप उसके भावार्थ पर निर्भर होता है।

Scanned with CamScanner

- कविता शिक्षण के उद्देश्य

1. पद्यांश / कविता / काव्य के शिक्षण से स्थायित्व और अमरता के गुणों का विकास करना है।
   " सुन जननी सोई सुत बड़भागी, जो पितु-मातृ वचन अनुरागी"

2. जीवन को प्रतिबिम्बित करने वाली तथा परिष्कार करने वाली कविता का रसास्वादन

3. कविता-शिक्षण से भाषा का शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण, उचित गति, यति, लय और भाव के अनुसार कविता का सस्वर वाचन करना है।

4. कविता की रसानुभूति से छात्रों को आनन्दित करना है।
   "विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः।"
   रस के बिना कविता कहलाने का अधिकार ही नहीं है।
   ~~" जो भरा नहीं है, पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्रेम नहीं।"~~
   " जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधारा नहीं।
   वह हृदय नहीं है, पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्रेम नहीं।

5. कविता शिक्षण से भावात्मक तथा ज्ञानात्मक पक्षों का विकास होता है।
   भावना, कल्पना तथा बौद्धिक तत्वों का विकास होता है।

6. छात्रों की सौन्दर्यानुभूति प्रवृत्तियों का विकास करना है।

काव्य शिक्षण

1७
- काव्य रसानुभूति का विषय है।
- काव्य शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य छात्रों को सौन्दर्य बोध कराना, उनकी सौन्दर्यानुभूति को जाग्रत करना है।
- काव्य शिक्षण-प्रणाली प्रेम करने के समान है।

Scanned with CamScanner